नागराज और जादूगर शाकूरा

मुफ्त

नागराज और जादूगर शाकूरा

सम्पादक : मनीषचन्द्र गुप्त
कथानक : राजा
कलानिर्देशन : प्रताप मुल्लीक
चित्रकार : चंदु
सुलेख : पालसंधाकर

पृथ्वी से कई हजार प्रकाश वर्ष दूर आकूना ग्रह —

इस ग्रह के वासी आकूना बौने अमर थे। और जादूगरी विद्या में माहिर थे—
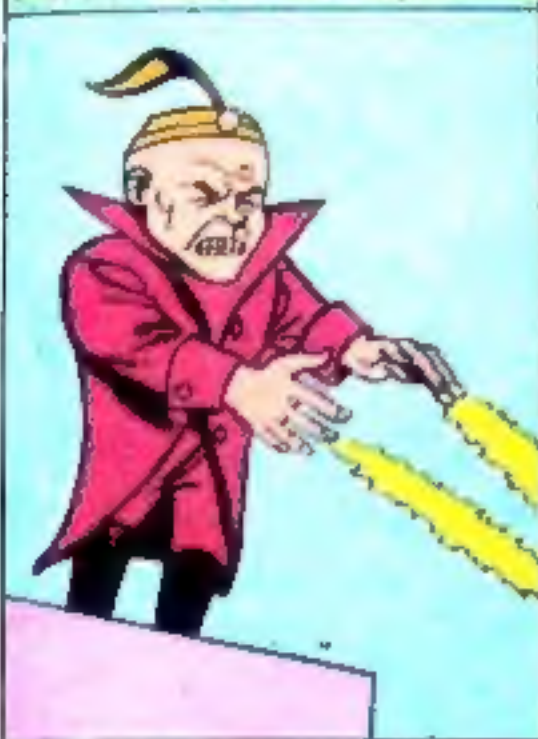
मेट्रोपोलिस। ओह, महाबली सुपरमैन यह आज किसके साथ आंख मिचौली खेल रहा है—

आज मैं तुम्हें छोड़ूंगा नहीं मिसाइलमैन!

उफ, यह किधर आ रहा है। यह तो वामिंस्टर ब्रिज की तरफ आ रहा है। अगर...

...यह इसे भी उड़ाने का इरादा रखता है तो बहुत बुरा होना है। उफ!

और सुपरमैन के देखते-देखते ही मिसाइलमैन की मिसाइलों ने पुल को ध्वस्त कर दिया—

धूम

फिर सुपरमैन ने उसे और कोई मौका नहीं दिया—

बहुत तबाही कर ली तुमने शैतान! बस अब कुछ नहीं कर पाओगे!

आज! तुम मुझे रोक नहीं सकोगे सुपरमैन!

और सुपरमैन तेज गति से उड़ता हुआ उसे मेट्रोपोलिस से दूर ले आया—
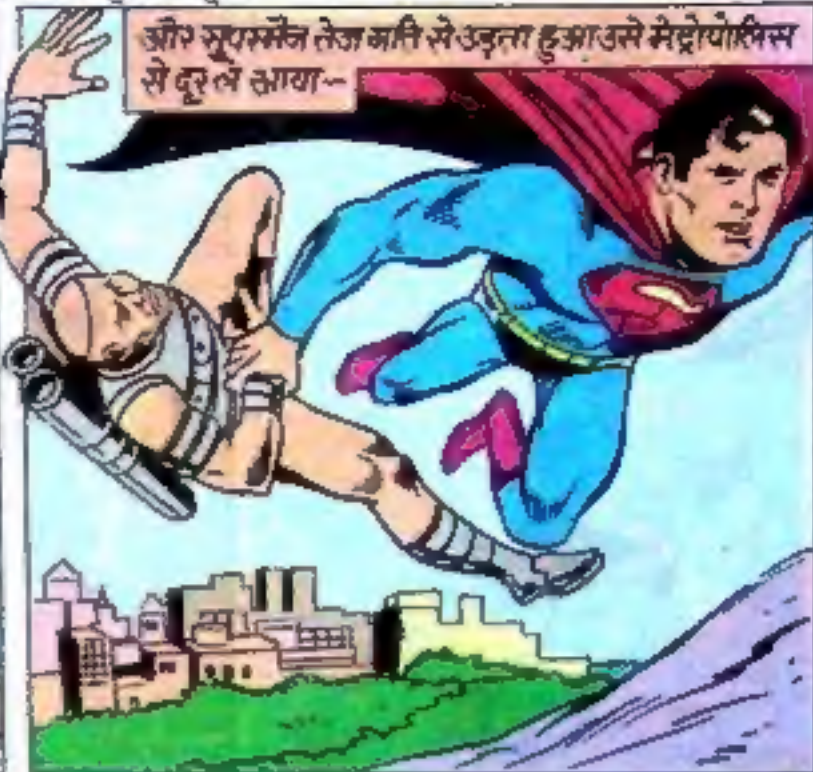
उफ! यह तुम मुझे उस ज्वाला-मुखी की तरफ क्यों ले जा रहे हो, सुपरमैन!
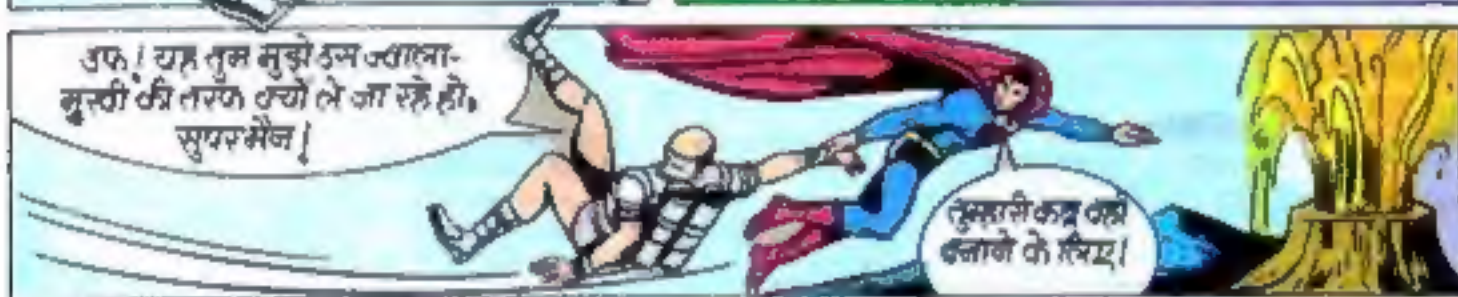
तुम्हारी कब्र बनाने के लिए!
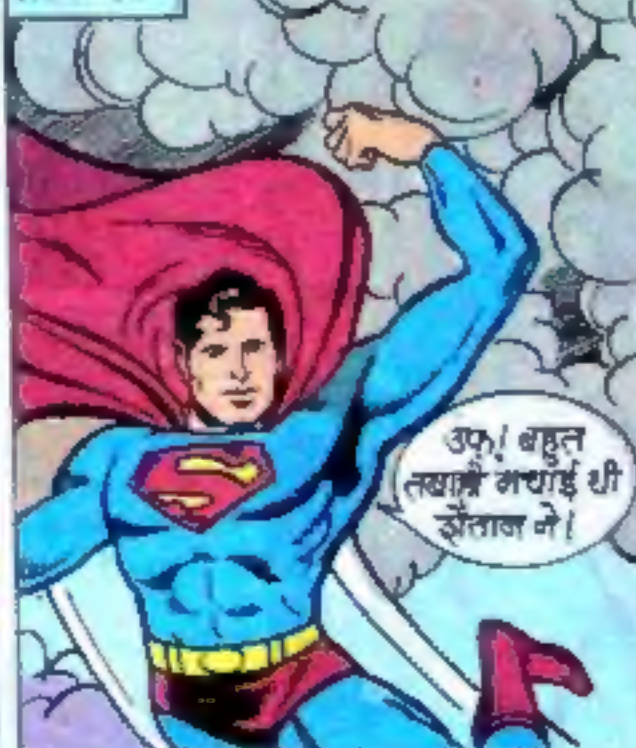
तभी—
और अब समय है अपने क्वार्क-कॉर्ट के रूप में आने का। अरे, यह क्या ?...
जैसे बिजली सी चमकी हो, किन्तु सुपरमैन की सुपर दृष्टि ने इस हीरे को बखूबी देखा था।

हीरा तीव्र गति से जमीन में धंसता चला गया—
सुपरमैन भी हीरे के पीछे जमीन में रास्ता बनाता हुआ प्रविष्ट हो गया।

और शीघ्र ही वह हीरे को उठाए बाहर निकला—

अपनी एक्स-रे दृष्टि से उसने हीरे में कैद इंसान को भी देख लिया—
अरे, इसमें तो कोई मानव कैद है।
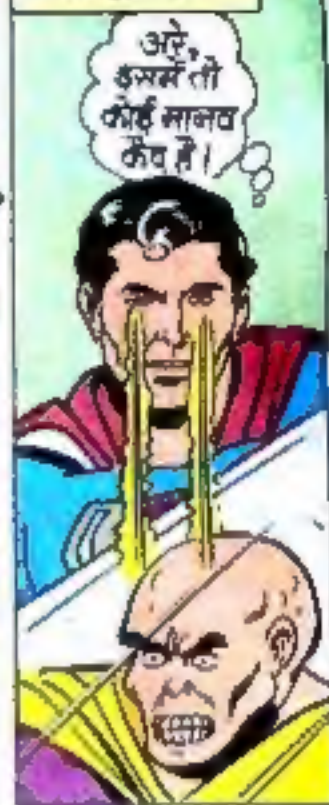
फिर उसने अपनी पावरफुल दृष्टि से उसके टुकड़े कर दिए—

और शाकूरा आज़ाद हो गया—
हैलो! मैं सुपरमैन!
शुक्रिया दोस्त! हा-हा-हा! मैं विक्टार शाकूरा! तुम मुझे केवल शाकूरा भी कह सकते हो।
फिर शाकूरा उसे अपने ग्रह शाकूरा से निकाले जाने की कहानी सुनाता चला गया।

सुपरमैन ने भी शाकूरा को पृथ्वी के बारे में बताया—
...यह है पृथ्वी का भूगोल और मैं असामाजिक तत्वों से पृथ्वीवासियों की रक्षा करता हूं।

और तब आया शाकूरा के दिमाग में एक शैतानी विचार —
तो यह है पृथ्वी का सबसे बलशाली मानव! अगर मैं इसको कब्जे में कर लूं तो पृथ्वी पर मेरा राज होगा।

अगले ही पल —
रुक जाओ सुपरमैन! अब तुम मेरे आधीन हो।

और सुपरमैन मुस्कराने लगा —
क्यों टिंगू मास्टर, क्या हुआ?
तुम्हें कैद करने के बाद मैं पृथ्वी पर राज करूंगा।

सुपरमैन ने पलटकर अपने लबादे को फटकारा —

लेकिन सुपरमैन ने उसे फूंक मार कर उड़ा दिया —

शाकूरा संभलकर कलाबाजीयां खाता आया और तेजी से सुपरमैन से टकराया —

शाकूरा पलटा और उसने सुपरमैन पर अपने जादू का एक भरपूर वार किया—
आह!
मेरे जादू के आगे तुम्हारी कुछ न चलेगी सुपरमैन!

और फंस के रह गया सुपरमैन शाकूरा की जादुई कैद में—
उफ! यह क्या हो गया। मैं हिल भी नहीं पा रहा हूं!
हा हा हा अब पृथ्वी पर मेरी हुकूमत चलेगी!

किन्तु सुपरमैन की आवाज ने उसकी हंसी पर ब्रेक लगा दिया—
यह तुम्हारी भूल है शाकूरा! अभी पृथ्वी के और भी रक्षक मौजूद हैं!
हैं! कौन हैं वे?

बैटमैन, स्पाइडरमैन और नागराज!

गाथम शहर की वह रात्रि—
यह समय है ब्रूस वायने यानि बैटमैन की रात्रि गश्त का, और अब यह देखना है कि यह बैट सिग्नल किसलिए दिया गया?

बैटमैन उस समय आश्चर्यचकित रह गया, जब —

सुपरमैन, तुम यहां और इतने असहाय! यह किसने किया?

तभी —

मैं और मेरा परिचय है जादूगर शाकूरा!

आह

धड़ाक

शाकूरा ने पलटकर जादुई शक्ति का प्रहार किया —

उफ़! मुझे कुछ दिखाई नहीं दे रहा!

पहाड़ कभी भी गिर सकता है।

हे गुरु गोरखनाथ! हमें इस चक्रव्यूह से निकालो
लगता है आज नहीं बच पाऊंगा।
और तभी प्रकाश पुंज, दिव्य प्रकाश से चकाचौंध हो गया –
उठो नागराज! देखो, मैं आ गया हूँ।
और फिर देखते ही देखते –

पर शाकूरा जाते-जाते भी अपनी शैतानी से बाज नहीं आया—

देखते ही देखते आदमियों का शरीर बदलने लगा—

और साथ ही उसके विचार भी बदलने लगे –
हा हा हा
तबाही मचा दूंगा विश्व में! शाकुरा जिन्दाबाद!

बैटमैन और स्पाईडरमैन ने अलबालों के चारों तरफ
रस्सी और मकड़ जाल का जाल बुनना शुरू किया—
उन्हें आशा थी कि वे अलबालों को इस तरह बेबस कर देंगे—
इधर सुपरमैन फिर गरजा—
नीचे से फिसला एक अलबालो—
आ!
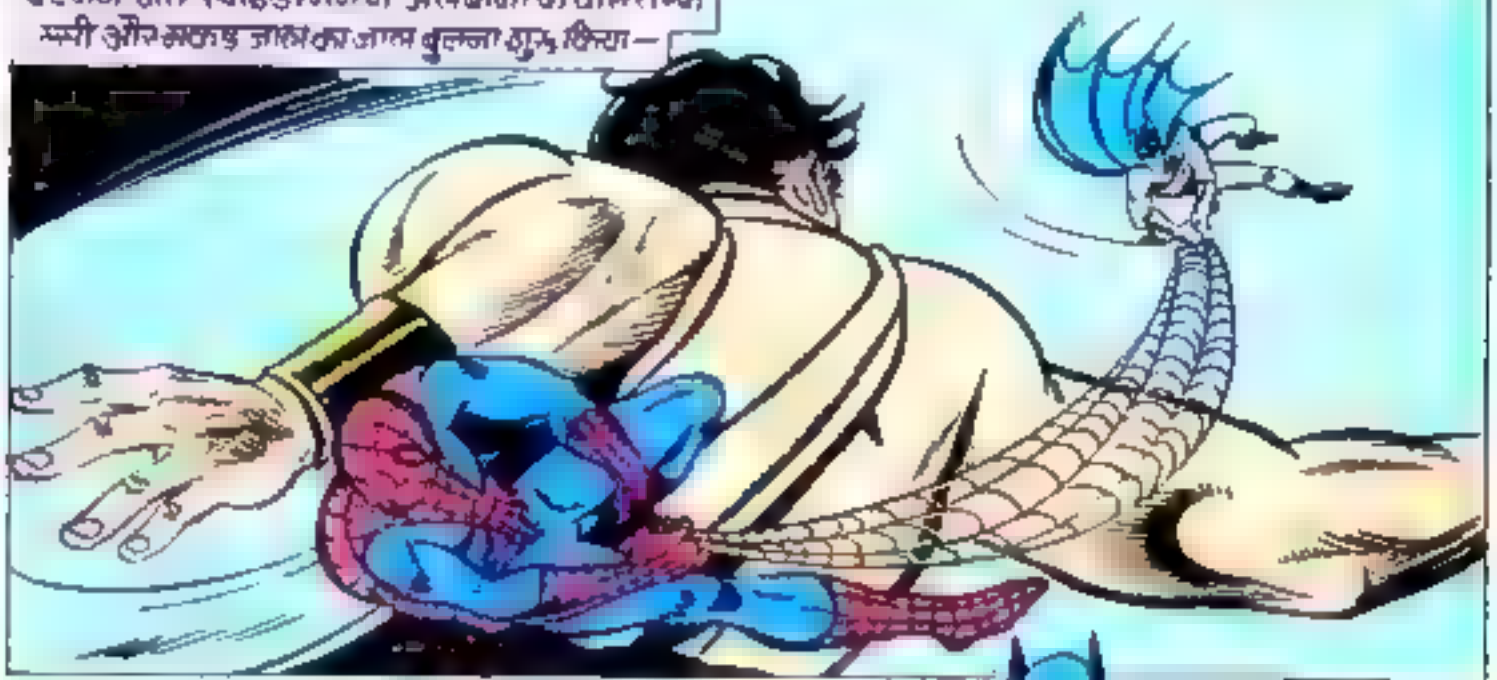
इस वक्त नागराज क्या कर रहा है ?
उफ़! कुछ देर पहले तुमने मेरी जान बचाई थी दोस्त! लेकिन अब मानवता की खातिर मुझे अहसान-फरामोशी करनी पड़ेगी!

उफ़! मेरे ज़हरीले दांत इसकी त्वचा को नहीं काट पा रहे!
इस तरह दसियों हाथियों को मौत की नींद सुला सकने वाला नागराज का यह ज़हरीला वार भी निष्फल रहा—

बस अब एक ही तरीका है इससे निकलने का!

नागानंद! नागानाथ!
नागराज की कलाइयों से दोनों सेनानायक निकल चले अपनी सेना के साथ!
और असरखानों के खुले मुंह में प्रवेश कर गये हजारों नाग—

चारों ने उसे घेर लिया। विस्मित थे सुपरमैन, बैटमैन और स्पाइडरमैन –
यह तो उठ भी नहीं पा रहा अब!
इसका शरीर भी नीला पड़ रहा है!
लेकिन नागराज मुस्करा रहा था!

तभी –
अरे! इसके मुंह से तो सांप निकल रहे हैं...

...और नागराज के हाथों में गायब हो रहे हैं!
तब नागराज ने बताया –
हां दोस्तो! यह सब नागों का ही कारनामा है। जब मैंने देखा की इसकी बाहरी त्वचा अभेद्य हो गई है...

...तो मैंने नागानंद और नागकाल को इसके मुंह के रास्ते इसके शरीर में भेजने का फैसला किया। इन्होंने शरीर के अन्दर जाकर इसे मार दिया।